



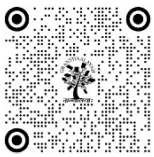
## STUDY OF THE INFLUENCE OF VALUES ON EDUCATIONAL ASPIRATIONS AND SELF-CONCEPT OF SECONDARY LEVEL STUDENTS

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा तथा आत्मा अवधारणा पर मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन

Deepti Rai <sup>1</sup>, Pragya Jha <sup>2</sup>

<sup>1</sup> Ph.D. Researcher, School of Education, Mats University, Raipur, Chhattisgarh, India

<sup>2</sup> Research Supervisor, Professor, School of Education, Mats University, Raipur, Chhattisgarh, India



### ABSTRACT

**English:** The education which is imparted in schools, colleges and universities is called formal education. The objectives, curriculum and teaching methods of this education are all fixed. It is planned and its planning is very strict. In this, the learners have to work according to the timetable of the school, college or university. There is a system of taking examinations and providing certificates. The biggest feature of this education is that it fulfills the needs of the individual, society and the nation. It develops knowledge and skills in the individual and makes him eligible for some business or industry. But this education is very expensive. This leads to more expenditure of money, time and energy. Education is an effort by one generation of society to transfer its knowledge to the next generation. From this point of view, education works as an institution which plays an important role in connecting an individual to the society and maintains the continuity of the culture of the society. A child learns the basic rules, systems, norms and values of the society through education. A child is able to connect with the society only when he is oriented towards the history of that particular society.

**Hindi:** वह शिक्षा जो विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में चलती है, औपचारिक शिक्षा कही जाती है। इस शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या और शिक्षण विधियाँ, सभी निश्चित होते हैं। यह योजनाबद्ध होती है और इसकी योजना बड़ी कठोर होती है। इसमें सीखने वालों को विद्यालय, महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालय की समय सारणी के अनुसार कार्य करना होता है। इसमें परीक्षा लेने और प्रमाण पत्र प्रदान करने की व्यवस्था होती है। इस शिक्षा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। यह व्यक्ति में ज्ञान और कौशल का विकास करती है और उसे किसी व्यवसाय अथवा उद्योग के लिए योग्य बनाती है। परन्तु यह शिक्षा बड़ी व्यय-साध्य होती है। इससे धन, समय व ऊर्जा सभी अधिक व्यय करने पड़ते हैं। शिक्षा, समाज एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखती है। बच्चा शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों, व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है। बच्चा समाज से तभी जुड़ पाता है जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है।

**Keywords:** Secondary Level, Educational Aspiration, Self Concept, Student  
माध्यमिक स्तर, शैक्षिक आकांक्षा, आत्मा अवधारणा, विद्यार्थी

**प्रस्तावना :-** शिक्षा का अर्थ ज्ञान, सदाचार, उचित आचरण, तकनीकी शिक्षा तकनीकी दक्षता, विद्या आदि को प्राप्त करने की प्रक्रिया को कहते हैं। शिक्षा में ज्ञान, उचित आचरण और तकनीकी दक्षता, शिक्षण और विद्या प्राप्ति आदि समाविष्ट हैं। इस प्रकार यह कौशल, व्यवसायों एवं विकास मानसिक उत्कार्य पर केन्द्रित है।

शिक्षा, समाज एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखती है। बच्चा शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों, व्यवस्थाओं, समाज



के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है। बच्चा समाज से तभी जुड़ पाता है जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है।

शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व का विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की 'शिक्ष' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बना है। 'शिक्षा' का अर्थ है सीखना और सिखाना। 'शिक्षा' शब्द का अर्थ सीखने-सिखाने की क्रिया को कहा जा सकता है।

**शैक्षिक आकांक्षा :-** शैक्षिक आकांक्षाएं आदर्शवादी मूल्य हैं जो उस शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाती हैं जिसे प्राप्त करने की आशा और इच्छा होती है। शैक्षिक अपेक्षाएँ ठोस मूल्य हैं जो कथित वास्तविकताओं द्वारा निर्धारित होते हैं जो एक व्यक्ति द्वारा सामना किए जाते हैं, जो आमतौर पर व्यक्तिगत क्षमताओं और अन्य बाधाओं पर विचार करते हैं।

### आत्म अवधारणा :-

किसी भी व्यक्ति द्वारा स्वयं के बारे में, तथा स्वयं की योग्यताओं क्षमताओं आदि के बारे में जो भी धारणा अथवा विचार विकसित किए जाते हैं उसे आत्म अवधारणाया स्व संप्रत्यय के नाम से जाना जाता है। बालक जैसे जैसे बड़ा होने लगता है, वह स्वयं के बारे में समझ विकसित कर लेता है।

विद्यार्थियों में आत्म अवधारणा के अंतर्गत दो पक्ष सम्मिलित होते हैं—

व्यक्तिगत पहचान — इस पहचान के अंतर्गत व्यक्ति का नाम, उसकी विशेष क्षमताएं तथा विशेषताएं सम्मिलित की जाती है। यह सभी व्यक्ति को दूसरों से अलग पहचान दिलाती है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान — यह पहचान व्यक्ति के विभिन्न सामाजिक समूहों से संबंध को दर्शाती है। इसमें व्यक्ति का धर्म, निवास क्षेत्र, स्थानीय समूह आदि को सम्मिलित किया जाता है।

### मूल्य :-

मूल्य के बिना जीवन कुछ भी नहीं, मूल्य के साथ ही जीवन अर्थपूर्ण है। जो मनुष्य मूल्यों को महत्व देता है, वो समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ऐसा व्यक्ति समय को महत्व देता है, वह हर पल का भरपूर आनंद लेता है एवं उसका भरपूर उपयोग भी करता है।

अतः इस प्रकार से प्रत्येक वह वस्तु जिसका महत्व होता है, उसे मूल्य कहा जाता है। सत्य, ईमानदारी, अच्छाई, इत्यादि मूल्य हैं, इसके विपरीत झुठ, बेईमानी आदि अवमूल्यन हैं। वैल्यू शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के

'Valere' शब्द से मानी जाती है जो किसी वस्तु की कीमत या उपयोगिता को वक्त करता है। भारतीय धर्म ग्रंथों में मूल्यों के लिए शीलशब्द अनेक स्थानों पर प्रयुक्त होता है। शील सर्वत्र भूषण का कार्य करता है। कहीं-कहीं शील शब्द चरित्र के लिए भी प्रयुक्त हुआ है। वस्तुतः मूल्य एक प्रकार का मानक है। मनुष्य किसी वस्तु, क्रिया, विचार को अपनाने से पहले यह निर्णय करता है कि वह उसे अपनाये या त्याग दे। जब ऐसा विचार व्यक्ति के मन में निर्णयात्मक ढंग से आता है तो वह मूल्य कहलाता है।

**अध्ययन का औचित्य एवं महत्व :-** परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं से जब कोई व्यवस्था मेल नहीं खाती है तब उस व्यवस्था को परिवर्तित करना समाज की उन्नति के लिये आवश्यक होता है। इसी विचारधारा के साथ ही विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा एवं आत्म अवधारणा पर परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की गयी।

1. विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास संबंधी कार्यक्रम विकसित करना।
2. विद्यार्थियों के आत्म अवधारणा में वृद्धि करना।
3. प्रयोगात्मक और नियंत्रण समूह दोनों के लिए उपलब्धि परीक्षण विकसित करना।
4. विद्यार्थियों में शैक्षिक मूल्य वृद्धि के लिए विभिन्न कार्यक्रम निर्धारित करना।
5. पारंपरिक शिक्षण के माध्यम से पढ़ाए जाने के बाद कौशल परीक्षण के माध्यम से शैक्षिक आकांक्षा की पूर्ति करना।

अध्ययन से प्राप्त आंकड़े विभिन्न क्षेत्रों में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की व्यक्तित्व विकास, रचनात्मकता तथा समस्या समाधान में वृद्धि का पार्श्वचित्र प्रस्तुत करेंगे जिसके आधार पर शिक्षविदों एवं शिक्षा नीति निर्धारकों को आर्थिक एवं शैक्षिक रूप से आत्मअवधारणा, शैक्षिक आकांक्षा, एवं मूल्यों में पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन एवं प्रारूप का निर्माण करने में मदद मिलेगी जिससे भविष्य में विद्यार्थियों को मूल्यों संबंधी आवश्यक

परामर्श प्रदान किया जा सकेगा ।

### अध्ययन का उद्देश्य :-

1. माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों के आयामों ईमानदारी, स्नेह, उपकारता, साहस, सभ्याचार, निष्ठा, अनुशासन तथा स्वच्छता एवं उनकी शैक्षिक आकांक्षा का सहसंबंधात्मक अध्ययन करना ।
2. माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों एवं उनमें आत्म अवधारणा का सहसंबंधात्मक अध्ययन करना ।

### अध्ययन की परिकल्पना :-

**H<sub>01</sub>** माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों का सार्थक प्रभाव उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर नहीं पाया जायेगा ।

**H<sub>02</sub>** माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों का सार्थक प्रभाव उनकी आत्म अवधारणा पर नहीं पाया जायेगा ।

**अध्ययन का क्षेत्र :-** प्रस्तुत शोध अध्ययन का क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य का रायपुर जिला है ।

**अध्ययन की विधि :-** प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है ।

### न्यादर्श :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु रायपुर जिले में संचालित माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कार्यरत 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। रायपुर जिले में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए विभिन्न क्षेत्रों को चुना गया है। इस जिले के अंतर्गत कार्य के लिए रायपुर जिले से सम्बन्धित विभिन्न शहरी व ग्रामीण क्षेत्र आदि सम्मिलित है। अध्ययन में प्रतिदर्श का चयन सोद्देश्य सजातीय निदर्शन पद्धति का प्रयोग किया गया ।

### परिकल्पना का सत्यापन :-

**परिकल्पना क्रमांक H<sub>01</sub>** के अनुसार माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों का सार्थक प्रभाव उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर नहीं पाया जायेगा । इस परिकल्पना को सत्यापित दोनों चरों के बीच पियरसन के सूत्र से सहसंबंध गुणांक निकाल कर किया गया । सहसंबंध गुणांक का मान तालिका 1 में दिया गया है ।

तालिका क्रमांक 1		
माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों के मूल्य तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसंबंध गुणांक		
चर	संख्या (N)	'r'
मूल्य	300	0.649, p<.05
शैक्षिक आकांक्षा	300	

$r(df=298)$  at .05 level 0.09

तालिका 1 में गणना से प्राप्त पियरसन सहसंबंध गुणांक  $r=0.649$  है जो कि माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों तथा शैक्षिक आकांक्षा के बीच धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है । इस सहसंबंध का मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर सिद्ध है । दोनों चरों के बीच सहसंबंध गुणांक से यह स्पष्ट है कि मूल्यों में संवर्धन से माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में भी वृद्धि होती है ।

इस परिणाम के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना **H<sub>01</sub>** माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों का सार्थक प्रभाव उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर नहीं पाया जायेगा, अस्वीकृत की जाती है ।

## तालिका क्रमांक 2

माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों के मूल्यों के आयामों तथा शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सहसंबंध गुणांक की गणना

मूल्यों के आयाम	संख्या (N)	शैक्षिक आकांक्षा
ईमानदारी (Honesty)	300	$r = .356, p < .05$
स्नेह (Love)	300	$r = .377, p < .05$
उपकारता (Helpfulness)	300	$r = .381, p < .05$
साहस (Courage)	300	$r = .302, p < .05$
सभ्याचार (Good manners)	300	$r = .343, p < .05$
निष्ठावान (Faithfulness)	300	$r = .303, p < .05$
अनुशासन (Discipline)	300	$r = .342, p < .05$
स्वच्छता (Cleanliness)	300	$r = .322, p < .05$

 $r(df=298)$  at .05 level 0.09

तालिका 2 के अवलोकन से निम्नलिखित तथ्यों की पुष्टि होती है –

- तालिका 2 में गणना से प्राप्त पियरसन सहसंबंध गुणांक  $r=0.356$  का मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर सिद्ध है जो कि शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों के आयाम ईमानदारी तथा शैक्षिक आकांक्षा के बीच सार्थक धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है ।
- तालिका 2 में गणना से प्राप्त पियरसन सहसंबंध गुणांक  $r=0.377$  का मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर सिद्ध है जो कि माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों के आयाम स्नेह तथा शैक्षिक आकांक्षा के बीच सार्थक धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है ।
- तालिका 2 में गणना से प्राप्त पियरसन सहसंबंध गुणांक  $r=0.381$  का मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर सिद्ध है जो कि माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों के आयाम उपकारता (helpfulness) तथा शैक्षिक आकांक्षा के बीच सार्थक धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है ।
- तालिका 2 में गणना से प्राप्त पियरसन सहसंबंध गुणांक  $r=0.302$  का मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर सिद्ध है जो कि माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों के आयाम साहस (courage) तथा शैक्षिक आकांक्षा के बीच सार्थक धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है ।
- तालिका 2 में गणना से प्राप्त पियरसन सहसंबंध गुणांक  $r=0.343$  का मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर सिद्ध है जो कि शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों के आयाम सभ्याचार (good manners) तथा शैक्षिक आकांक्षा के बीच सार्थक धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है ।
- तालिका 2 में गणना से प्राप्त पियरसन सहसंबंध गुणांक  $r=0.303$  का मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर सिद्ध है जो कि शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों के आयाम निष्ठावान (faithfulness) तथा शैक्षिक आकांक्षा के बीच सार्थक धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है ।
- तालिका 2 में गणना से प्राप्त पियरसन सहसंबंध गुणांक  $r=0.342$  का मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर सिद्ध है जो कि शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों के आयाम अनुशासन (discipline) तथा शैक्षिक आकांक्षा के बीच धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है ।
- तालिका 2 में गणना से प्राप्त पियरसन सहसंबंध गुणांक  $r=0.322$  का मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर सिद्ध है जो कि शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों के आयाम स्वच्छता (cleanliness) तथा शैक्षिक आकांक्षा के बीच धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है ।

इस परिणाम के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना  $H_{01}$  माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों के आयामों ईमानदारी, स्नेह, उपकारता, साहस, सभ्याचार, निष्ठा, अनुशासन तथा स्वच्छता का सार्थक प्रभाव उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर नहीं पाया जायेगा, अस्वीकृत की जाती है ।

**परिकल्पना क्रमांक H<sub>02</sub>** के अनुसार माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों का सार्थक प्रभाव उनकी आत्म अवधारणा पर नहीं पाया जायेगा । इस परिकल्पना को सत्यापित दोनों चरों के बीच पियरसन के सूत्र से सहसंबंध गुणांक निकाल कर किया गया । सहसंबंध गुणांक का मान तालिका 3 में दिया गया है ।

**तालिका क्रमांक 3**

**माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों के मूल्य तथा आत्म अवधारणा के मध्य सहसंबंध गुणांक**

चर	संख्या (N)	'r'
मूल्य	600	0.371, $p < .05$
आत्म अवधारणा	600	

$r(df=598)$  at .05 level 0.07

तालिका 3 में गणना से प्राप्त पियरसन सहसंबंध गुणांक  $r=0.371$  का मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर सिद्ध है जो कि माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों तथा आत्म अवधारणा के बीच धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है ।

दोनों चरों के बीच सहसंबंध गुणांक से यह स्पष्ट है कि मूल्यों में संवर्धन से माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आत्म अवधारणा में भी वृद्धि होती है ।

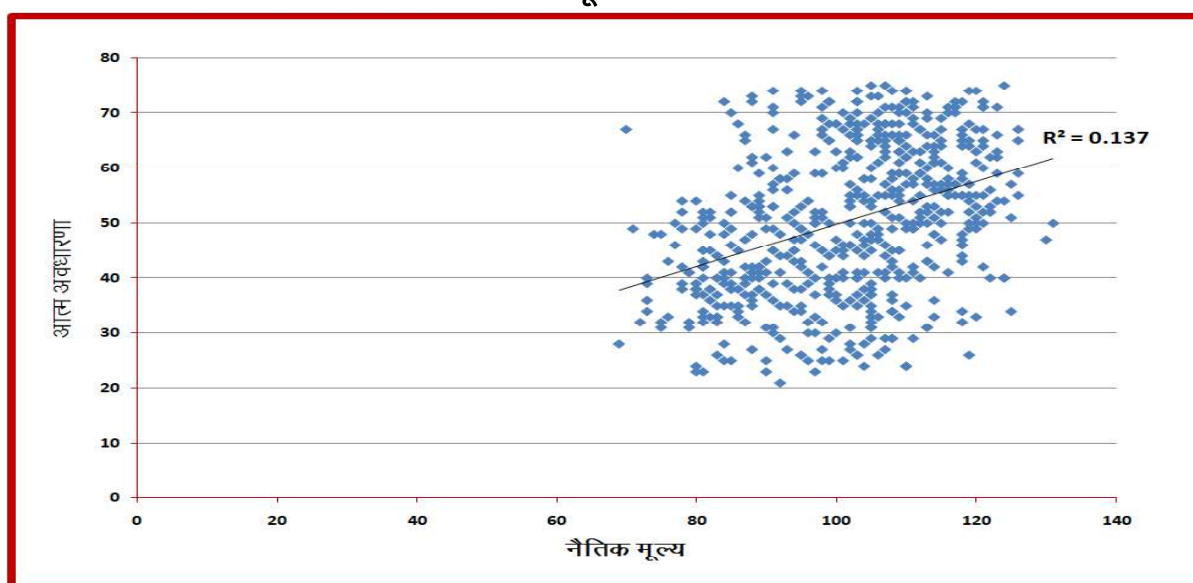
अतः माध्यमिक विद्यालयों के वह विद्यार्थी जो कि मूल्यों को अधिक महत्व देते हैं, उनमें आत्म अवधारणा भी उच्च स्तर की होती है ।

माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों का उनकी आत्म अवधारणा पर प्रभाव को और अधिक समझने के लिये निर्धारण गुणांक (Coefficient of Determination  $R^2$ ) की गणना रेखाचित्र से की गयी (आरेख 1) ।

आरेख 1 में निर्धारण गुणांक ( $R^2$ ) का मान 0.137 प्राप्त हुआ है, अतः मूल्य विद्यार्थियों की आत्म अवधारणा में 13.7% परिवर्तनशीलता उत्पन्न कर रहे हैं । इसके आधार पर यह माना जा सकता है कि विद्यार्थियों के मूल्यों का उनकी आत्म अवधारणा के साथ धनात्मक किन्तु कमजोर सहसंबंध है ।

**आरेख क्रमांक 1**

**माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों तथा आत्म-अवधारणा के मध्य रेखाचित्र**



इस परिणाम के परिप्रेक्ष्य में परिकल्पना H<sub>02</sub> माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों का सार्थक प्रभाव उनकी आत्म अवधारणा पर नहीं पाया जायेगा, अस्वीकृत की जाती है ।

**परिकल्पना का निष्कर्ष :-** माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में उच्च नैतिक मूल्य उनकी शैक्षिक आकांक्षाओं तथा अधिक सकारात्मक आत्म अवधारणा से जुड़े हैं जो कि माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की शैक्षणिक महत्वाकांक्षाओं तथा आत्म अवधारणा को बढ़ावा देने में नैतिक शिक्षा के महत्ता को प्रतिपादित करते हैं ।

### सुझाव –

1. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं पर उनके व्यक्तित्व के पड़ने वाले प्रभाव का आंकलन भविष्य में संभावित है ।
2. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं पर शिक्षण प्रभावशीलता के पड़ने वाले प्रभाव का आंकलन भविष्य में संभावित है ।
3. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आत्म अवधारणा पर मानसिक स्वास्थ्य के पड़ने वाले प्रभाव का आंकलन भविष्य में संभावित है ।
4. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आत्म अवधारणा पर शिक्षा के माध्यम के पड़ने वाले प्रभाव का आंकलन भविष्य में संभावित है ।
5. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा तथा आत्म अवधारणा पर संज्ञानात्मक कौशल के पड़ने वाले प्रभाव का आंकलन भविष्य में संभावित है ।
6. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा तथा आत्म अवधारणा पर उनके सांस्कृतिक परिवेश के पड़ने वाले प्रभाव का आंकलन भविष्य में संभावित है ।

### संदर्भ सूची :-

- भटनागर,एस. (1982) *शिक्षा मनोविज्ञान*, लायल बुक डिपो, मेरठ, 9 – 10.
- करलिंगर,एफ. एन. (1983) *फाऊंडेशंस ऑफ बिहेवियरल रिसर्च*, न्यू दिल्ली सुरजीत पब्लिकेशन ।
- मिश्रा, लोकनाथ (2007) *रिप्लैक्शन ऑफ प्यूपिल टीचर्स ऑफ टू ईयर बीएड कोर्स टुवर्ड्स टीचिंग टीचर्स एजुकेशन* वॉल्यूम 6 पृ.सं. 05 ।
- अस्थाना, विपिन एवं श्रीवास्तव, विजया (2009) *शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी*, आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन ।
- सिन्हा पवन (2015) *भारतीय आधुनिक शिक्षा*, मोतिलाल नेहरू कॉलेज साउथ केम्पस दिल्ली विश्वविद्यालय, अक्टूबर ।
- श्रीवास्तव मुकेश,शर्मा पुष्पलता (2021) *शिक्षा के दार्शनिक दृष्टिकोण* पेज नं.- 41,52
- चौहान रीता, पाठक पी. डी. (2021) *अधिगमकर्ता एवं अधिगम प्रक्रिया*, पेज नं. 76–79
- यादव सियाराम (2021) *अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया*, शारदा पुस्तक सदन, इलाहाबाद, – पेज नं. 442–447